Artistic Narration Dec. 2014, Vol. VI http://anubooks.com/product/artistic-narration
(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

10

भारतीय कला और प्रतीक

कु0 ख्याति सिहँ*

किसी भी जड़ अथवा चेतन पदार्थ को देखकर हमारे मन में उत्पन्न भावना उसकी समता किसी अन्य पदार्थ से करती है जैसे – आकाश को देखकर उसकी विशालता का, सिंधु से गंभीरता का, पृथ्वी से सहनशीलता का, हिमालय से अचलता का आभास होता है और वह उस भाव का प्रतीक बन जाता है। वैसे तो प्रत्येक रूप में प्रतीक छिपा है क्योंकि प्रतीक व्यंजनात्मक रूप से या भावनात्मक समता के धरातल पर विशिष्ट अर्थ को प्रकट करता हुआ अर्थ बताता है। हिन्दी साहित्य कोष के अनुसार– "कहा जा सकता है कि किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है। अमूर्त अदृश्य, अश्रव्य, अप्रस्तुत विषय का प्रतीक प्रतिविद्यान मूर्त, दृश्य, श्रव्य, प्रस्तुत विषय द्वारा करता है।"(1)

जिस प्रकार बीज में एक वृक्ष छिपा रहता है उसी प्रकार प्रतीक की पृष्ठभूमि में एक विस्तार होता है। वह किसी भावना का, परम्परा का, व्यक्ति का, प्रकृति का अथवा किसी अन्य विराट सत्ता को इंगित करने वाला रूप होता है। प्रतीक रूप की रचना किसी अज्ञात वस्तु का भ्रम पैदा करने के लिए की जाती है। प्रतीक, अलौकिक का लौकिक रूपान्तरण होता है अर्थात वह एक काल्पनिक सत्ता का चाक्षुश इंगित होता है। प्रतीक अपने अर्थ का सम्पूर्ण पर्याय नहीं होता वह तो अपनी चाक्षुश सत्ता से ध्यान को किसी प्रस्तुत, अशरीरी की अनुभूति की ओर ले जाता है।

प्रतीक ऐसा चिन्ह रूप होता है जो किसी व्यक्ति, विषय, घटना, क्रिया भावना आदि को व्यक्त करता है। डॉ0 बासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है "जो प्रतिरूप है उसकी सबसे अधिक अभिव्यक्ति प्रतीक द्वारा ही की जा सकती है। प्रतीक ही अमूर्त की सच्ची मूर्ति है। प्रतीक में व्यक्तिगत रूपों का अभाव होने से वह प्रतिरूप के सब रूपों को प्रकट कर सकता है। जो स्वयं मूर्त भाव से कम से कम आक्रांत होता है वही प्रतिरूप का सबसे अधिक परिचायक है"(2)

भारत में तो आदिकाल से ही प्रतिकों के माध्यम से आत्माभिव्यक्ति होती आयी है। आदि काल में धर्म के उदय होने से पूर्व मानव अपने ही माध्यम से अभिव्यक्ति करता था। उस समय में मानव सरल व कलात्मक प्रतीक बनाकर सदैव प्रकृति के उपादानों की पूजा कर अपने माध्यम से उसकी गतिशीलता को अभिव्यक्त करते थे। वे माध्यम थे–कुछ चिन्ह। सम्भवतः सीमित ज्ञान के कारण मानव के लिए वस्तु का पूर्ण चित्र बनाना असम्भव रहा, जो आज के कलाकारों का प्रेरणा श्रोत है।

विद्वानों ने प्रतीकों को दो भागों में बाँटा है (1) साहित्यिक प्रतीक जिसमें भावनात्मक साम्य का ध्यान रखा जाता है (2) वैज्ञानिक प्रतीक जिसमें एक प्रतीक किसी विशिष्ट विम्ब के रूप में दूसरे प्रतीक के द्वारा प्रकट किया जाता है।

---

* *शोधार्थी*

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

साहित्यिक तथा वैज्ञानिक प्रतिकों के अतिरिक्त ऐतिहासिक, धार्मिक तथा समाजिक प्रतीक भी होते हैं जो मान्यताओं के आधार पर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते है। अपनी बात को संक्षेप में कहने के लिए कलाकार कुछ संकेतों का सहारा लेता है। ये संकेत मूर्त अथवा अमूर्त दोनों प्रकार के होते है।

परम्परागत चित्रों में मूर्त तथा आद्युनिक कला में अमूर्त प्रतिकों की एक निरन्तर परम्परा चली आ रही है।[3]

भारतीय संस्कृति में अनन्त आत्मा की व्याख्या का सतत प्रयत्न नजर आता है। संसार या जीवन की उपमा चक्र से दी गयी है। जिस प्रकार चक्र गति का बोधक है उसी प्रकार जीवन का अर्थात उसके सुख और संताप का। चक्र में वृत के नत और उन्नत भाग जीवन के उतार और चढ़ाव के प्रतीक है।

संसार को गतिमय रखने में सूर्य का महत्व स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है, इसलिए सूर्य को ही विष्णु या किसी अज्ञात संचालक शक्ति का प्रतीक माना गया है। सूर्य की किरणों में सात रंगों का समावेश है जिसकी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति ऋग्वेद में स्त्रोतों में सूर्य का सात घोड़े वाले रथ पर सवार होना है।

भारतीय कला में मानवीय और दैविक तत्वों के मध्य जो संबंध व्यवहार नजर आता है वही कला की आत्मा है और वह अपनी अभिव्यक्ति में प्रतीक का सहारा लेती है जैसे–गंगाधारा और नागभूशण शिव के प्रतीक हैं, मोर पंख तथा मुरली कृष्ण के प्रतीक हैं, सिर के पीछे आभामण्डल दैवत्व का प्रतीक है। आरम्भ में बौद्व धर्म में बुद्व की आकृति के स्थान पर कमल बना दिया जाता था। कालान्तर में इन प्रतिकों का स्थान बुद्व की प्रतिमा ने ले लिया। शेशसायी विष्णु प्रतिकों के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। क्षीर सागर अनन्त और असीम का प्रतीक है। अपने सहस्त्र फलों के द्वारा सहस्त्रधारी सृष्टि के प्रतीक है। विष्णु और लक्ष्मी नारी के प्रतीक है। विष्णु की नाभि से लगा हुआ कमल और उस पर बैठे बृह्मा पुरूशत्व में निहित सृष्टि के बीच और सृष्टि के चतुर्दिक विकास के प्रतीक है।

मानव सभ्यता ने अब तक इतनी प्रगति की है कि इसका ठीक–ठीक इतिहास विश्व की आदिम कलाकृतियों को देखकर ही भली–भाँति जाना जा सकता है। इस प्रकार की कला मानव की आस्था व विश्वास की कहानी कहती है। जादू, टोना–टोटका आदि प्रत्येक चिन्ह के रूप में भी इनका अंकन हुआ। मांगलिक पूजा के चिन्ह स्वास्तिक, चक्र, त्रिशूल त्रिकोण आदि का चित्रण इसी भाव भूमि पर हुआ है। सिन्धु सभ्यता में कपड़ों और वर्तनों में पीपल की टहनी व पत्तों का अंलकरण है। पीपल का वृक्ष विश्व सृष्टि का प्रतीक है।

चित्रण में प्रतीक रूपों का सृजन करना मनुष्य का सहज स्वभाव रहा है। इसके अतिरिक्त प्रतिकों के पीछे भय, उपासना, रहस्य, अतिविश्वास आदि भावनायें भी रही है। आदिमानव से लेकर आधुनिक मानव ने कुछ प्रमुख प्रतिकों का अंकन चित्रण में बार–बार किया है जो इस प्रकार है।–

स्वास्तिक –मानव समाज के कल्याण का प्रतीक है स्वास्तिक। स्वास्तिक प्रतिकों की परम्परा शिला चित्रों से आरम्भ होकर सिन्धु घाटी की सीलों जैन, बौद्ध धर्म तथा हिन्दू के प्रतिकों और

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

लोक–कलाओं में आज भी प्रचलित है। स्वास्तिक के (.) अबाहू तथा सबाहू (+) रूप देखने को मिलते हैं। प्राचीन भारत के मिट्टी के पात्रों पर भी इसके उदाहरण मिलतें है।डा0 कुमार स्वामी के मतानुसार–"स्वास्तिक विश्व व्यापी अथवा सभी देशों में मिलने वाला प्राचीन प्रतीक है।"

पंडित रामचन्द्र शास्त्री ने स्वास्तिक को कमल का पूर्ण रूप माना है। यह मानव तथा विश्व का सर्वोत्तम मांगलिक चिन्ह है। स्कन्ध पुराण में भगवान विष्णु के दाहिने और बायें पैरों में कुछ 19 चिन्हों में स्वास्तिक का उल्लेख है। बनियावेरी गुफा में स्वास्तिक के दो उदाहरण मिलते हैं। बुद्ध के चरणों में स्वास्तिक प्रतीक का अंकन हुआ है। स्वास्तिक को सौभाग्य सूचक, सूर्य पूजा से सम्बद्व, उर्वरता प्रतीक, अग्नि, वज्र, जल, ज्योतिश प्रतीक चारों दिशाओं में व्याप्त, विश्व मण्डल के चतुर्भुजी रूप का प्रतीक चारों वर्णों आदि का प्रतीक माना गया है। वर्तमान समय में स्वास्तिक मांगलिक कृत्यों के पूर्व पूजा जाता है।

कुछ अन्य विद्वानों ने स्वास्तिक के उदभव का स्त्रोत ओंकार (□) को माना है।[4] यह चार युग, चार वर्ण, चार आश्रय स्वास्तिक के ही प्रतीक हैं।

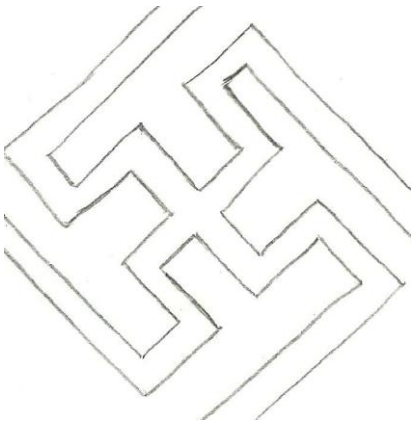

शंख – मानव हृदय में जागृत उन समस्त भावनाओं और विचारों को जिनके लिए शब्दों की भाषा पर्याप्त नहीं है प्रतीक के माध्यम द्वारा सरलता से अभिव्यक्त किया जाता है। भगवान शिव और सूर्य के पूजन में शंख का उपयोग वर्णित है। शंख का महत्व धार्मिक आराधना तक ही सीमित नहीं है। यह अनादि काल से भारतीय जीवन का अंग रहा है। राजनैतिक क्षेत्र में युद्ध की घोषणा और विषय की सूचना दोनों का प्रतीक है। प्राचीन काल में प्रत्येक यौद्वा इसे अपने साथ रखते थे। अतः शंख पुरातन राष्ट्रीय वाद्य भी है

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

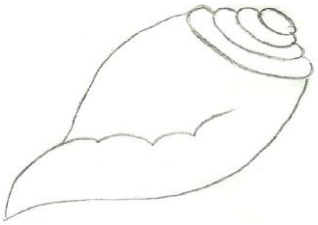

कमल – कमल भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। कमल सदैव प्रकाशमान सूर्य की ओर मुँह किये होता है। यह हमारे प्रकाशोपासक होने का प्रतीक है। "तमसोमाज्योतिर्गमय" का मूल तात्पर्य कमल को प्रदान करता है। विविध त्यौहारों, शुभ कार्यों तथा मंगल अनुष्ठानों में कमल का चित्रांकन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सृष्टि के रचियता का जन्म कमल से हुआ है और कमल सृष्टि का प्रतीक है। कमलनाल (तना) माया है और पुष्प सम्पूर्ण विश्व है। फल निवारण का प्रतीक है।

भगवान विष्णु के हाथ में कमल के रूप में संसार है। विकसित पदम सूर्य के प्रतीक की भांति भरहुत सांची और अमरावती आदि बौद्व स्थों में बनाये गये है। सितनवासल, एलौरा आदि गुहा चित्रों में कमल वन अलंकरणों में उनका वैविध्य मनोहर रूप में छाया हुआ है। कमल का प्रयोग चित्र मूर्ति तथा स्थापत्य सभी में हुआ है।

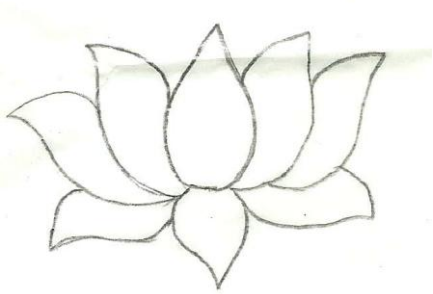

चक्र – चक्र मानव सभ्यता के विकास की कुंजी है। चक्र हमारे जीवन का अविभाज्य अंग है। हमारे पूर्वजों ने चक्र के इस उपयोगी स्वरूप को बहुत पहले ही पहचान लिया था तभी उन्होनें इसे अपनी कला का एक अनुपम प्रतीक बनाया। चक्र गति और काल का बोध कराता है। इस प्रतीक माध्यम से हमें समय के सदुपयोग का उपदेश प्राप्त होता है।

चक्र के दो मुख्य अंग होते है– केन्द्र और परिधि। ये दोनो भिन्न–भिन्न प्रवृत्तियों के परिचायक है। केन्द्र विश्राम का प्रतीक है, तो परिधि गति का। केन्द्र एकता का बोध कराता है तो परिधि अनेकता का। इस प्रकार चक्र दोनों में समन्वय और सामंजस्य स्थापित करने वाला अभिप्राय हैं। अनेकता में एकता का पाठ सिखाने वाला चक्र से बढ़कर अन्य कोई प्रतीक नहीं है।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

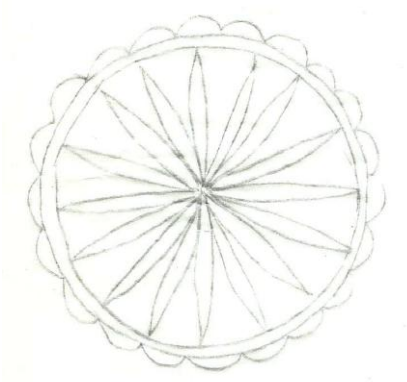

चक्र एक मांगलिक प्रतीक है। चक्र को देवी देवताओं का प्रभा मण्डल और उनका आयुध बनाया गया हैं। आभूषणों में भी चक्र के प्रतीक को अपनाया गया था। कर्णाभरण के रूप में चक्र का उल्लेख ऋग्वेद में पाया गया है। चक्र प्रतीक भारतीय जीवन का सार्वभौमिक अर्थ अभिव्यक्त करता है। इसके बिना न जैन धर्म आगे बढ़ा, न बौद्ध धर्म और न ही ब्राहम्ण धर्म।

वस्तुतः भारती जीवन में चक्र की परम्परा बड़ी पुरानी है। प्रागैतिहासिक शिला चित्रों में भी चक्र के चित्रांकन पाये गये है। उस युग की मृदभांडकला में चक्र के अंकन दृष्टव्य है। इसकी प्रतीकात्मकता एवं उपयोगिता के कारण ही इसे भारत के राष्ट्र ध्वज में स्थान दिया गया है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति आदि से अन्त तक चक्र से अनुप्राणित रही है।[5]

कलश– कलश वस्तुतः दिव्य सौन्दर्य और सृजन का प्रतीक है। पूर्ण कलश जीवन और आनन्द का स्त्रोत है। इसी मांगलिकता के कारण कलश के बिना हमारा कोई भी धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न नहीं हो पाता है। मंगल कलश को बृाह्मण, जैन तथा बौद्ध सभी श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखते है। भारतीय कलाकार ने कलश का उपयोग भी बहुविधि किया है। कलश का महत्व साहित्य की अपेक्षा कला और धर्म में अधिक है। भरहुत, सांची, अमरावती, मथुरा, बोधगया आदि विभिन्न स्थानों के उत्कीर्ण शिल्प में पूर्ण कलश या मंगल कलश के मनोहारी रूप देखने को मिलते हैं।

वस्तुतः प्रतीक आदिम काल से ही मानव स्वभाव के साथ जुड़े हुए है। इनके बिना वह रह नहीं सकता। चित्र, साहित्य, मूर्ति संगीत, वास्तु आदि सभी कलाओं में प्रतीक का बहुआयामी प्रभाव है।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

भारतीय कला प्रतीक यहाँ की धार्मिक एवं सांस्कृतिक भावनाओं के आधार पर सरलता और सिद्धि से बनाए गए है। उन्हें एक बार समझ लेने पर उनसे आनन्द का स्त्रोत उमड़ता है। अपने महान कलाकारों की विद्या, बुद्धि एवं परिमार्जित भावनाओं के आधार पर बनायें ये प्रतीक हमें चकित कर देते हैं। अतः स्पष्ट है कि भारतीय कला में रचे वसे ये विभिन्न प्रतीक भारतीय कला के एक महत्वपूर्ण अंश है जिनके समन्वय से कलाकृतियॉ निखर गयी हैं।

संदर्भ

1 हिन्दी साहित्यकोष भाग । पृष्ठ सं0515

2 भारतीय कला,पृष्ठ सं0 7

3 Lechner,George "Art East and West" –Marg xxxviii p.9.

4 श्री वास्तव डॉ0ए0एल0 भारतीय कला प्रतीक, प्रकाषन– उमेष प्रकाषन,100लूक रगंज, इलाहाबाद / प्र0सं0–22–28

5 श्री वास्तव डॉ0ए0एल0 भारतीय कला प्रतीक,प्रकाषन– उमेष प्रकाषन,100लूकर गंज इलाहाबाद प्र0सं0 66–70